परिवार में होने वाले बच्चों में जेनेटिक बीमारी होने की संभावना एवं बचाव!

जब भी गर्भधारण होता है, बच्चा आने की खबर से परिवार में खुशी की लहर दौड़ जाती है। आने वाला बच्चा स्वस्थ है इसलिए गर्भवती महिला की देखभाल करना जरूरी है। साथ ही यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि बच्चे में कोई गंभीर बीमारी नहीं हो। थैलेसीमिया मेजर एक ऐसी ही गंभीर जेनेटिक बीमारी है, और भारत देश में अधिक संख्या में पायी जाती है। इस बीमारी का इलाज बहुत मुश्किल है किन्तु बचाव बहुत आसान है। यदि गर्भधारण से पूर्व ही होने वाले माता–पिता (पति–पत्नी) की थैलेसीमिया के वाहक होने की जाँच, एक साधारण खून के टेस्ट द्वारा कर ली जाये तो थैलेसीमिया ग्रस्त बच्चे का जन्म रोका जा सकता है। यदि पति पत्नी दोनों ही इस बीमारी के वाहक (Carrier) पाये जाते हैं तो पेट के बच्चे की 12-13 हफ्ते पर जाँच द्वारा यह पता लगाया जा सकता है कि कहीं वह थैलेसीमिया मेजर से ग्रस्त तो नहीं है। यदि ऐसा है तो माता–पिता गर्भपात का निर्णय लेकर थैलेसीमिया मेजर ग्रस्त बच्चे का जन्म रोक सकते हैं।

थैलेसीमिया से बचाव की विस्तृत जानकारी पत्र उपलब्ध है।

स्पाइनल मस्कुलर एट्राफी (Spinal Muscular Atrophy – SMA) एक ऐसी ही गंभीर जेनेटिक बीमारी है, और हमारे देश में इस बीमारी का वाहक होने की संभावना बहुत अधिक है।

इस बीमारी में बच्चे के शरीर में अत्यधिक ढ़ीलापन रहता है, तथा उसका शारीरिक विकास नहीं हो पाता है। उसे खाने–पीने में भी बहुत मुश्किल होती है। अधिकतर बच्चों की एक साल के अंदर मृत्यु हो जाती है या इस बीमारी से पीड़ित बच्चे शारीरिक रूप से विकलांग हो सकते हैं। इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है किन्तु बचाव बहुत आसान है। यदि गर्भधारण या गर्भधारण के पूर्व ही होने वाले माता या पिता में से किसी एक का एस एम ए (SMA) का वाहक होने की जाँच कर ली जाये। यदि जाँच में पति या पत्नी एस० एम० ए० का वाहक (Carrier) पाया जाता है तो दूसरे

की भी जाँच करना आवश्यक है। पति और पत्नी दोनों अगर एस0 एम0 ए0 के वाहक हों तो उनके बच्चे में गंभीर प्रकार की स्पाइनल मस्कुलर एट्राफी (Spinal Muscular Atrophy – SMA) की बीमारी आने की संभावना 25 प्रतिशत होती है। तीसरे महीने में गर्भ की जाँच करके इस गंभीर बीमारी से बचा जा सकता है।

अब इसी तरह की तीसरी जेनेटिक/अनुवांशिक बीमारी के बारे में जानकारी दी है।

फ्रेजाइल–एक्स–सिंड्रोम (Fragile X Syndrome) अनुवांशिक मंदबुद्धि होने का सबसे प्रमुख कारण है। इस बीमारी में ऑटिज्म, हाइपरएक्टिविटी तथा अन्य मंदबुद्धि के लक्षण हो सकते हैं। कोई भी व्यक्ति Fragile X Syndrome का वाहक हो सकता है। यदि परिवार में कोई मंदबुद्धि बच्चा नहीं है तब भी, इस बीमारी का वाहक होने की संभावना होती है। इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है, किन्तु बचाव सरल है। एक साधारण खून के टेस्ट द्वारा यह पता लगाया जा सकता है कि माँ/पत्नी इस बीमारी का वाहक है या नहीं। यदि टेस्ट पॉजीटिव आता है तो, आने वाले पेट के बच्चे में गर्भ में ही जाँच करके बताया जा सकता है कि कहीं बच्चा इससे ग्रस्त तो नहीं है। यदि ऐसा हो तो गर्भपात किया जा सकता है।

इन गंभीर बीमारियों से परिवार का बचाव संभव है। गर्भधारणा पूर्व इन बीमारियों के लिये पति–पत्नी की जाँच करना उचित है। किसी भी परिवार में यह बीमारियाँ हो सकती है। गर्भपरीक्षण और अगर माता पिता उचित समझे तो बीमारी ग्रसित बच्चे का गर्भपात, यही बचाव का उपाय है। यह जानना जरूरी है कि बीमारी के वाहक (कैरियर) व्यक्ति को इस कारण आमतौर पर कोई स्वाथ्य में कमी नहीं होती है या बीमारी के लक्षण नहीं पाये जाते हैं। ऐसे परिवार में स्वस्थ बच्चे होने की संभावना 75 प्रतिशत होती है।

बचाव ही उपाय है।

डा0 शुभा फड़के **डा0 कौशिक मंडल**

मेडिकल जेनेटिक्स विभाग, संजय गाँधी स्नातकोत्तर आर्युविज्ञान संस्थान, लखनऊ।